

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धातम को जान ।
 निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान ॥
 नव केवल लब्धि प्रकटाओ,
 फिर योगों को नष्ट कराओ ।
 अविनाशी सिद्ध पद को पाओ,
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥३॥

(६)

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है ।
 सिद्धों का दरबार है ये सिद्धों का दरबार है ॥टेक॥
 खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं ।
 दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है ।
 चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है ॥१॥
 भक्ति से नृत्य-गान कोई है कर रहे ।
 आतम सुबोध कर पापों से डर रहे ॥
 पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है ॥२॥
 जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है ।
 छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है ॥
 देख लो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्ति द्वार है ॥३॥

(७)

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले ।
 तुझ ही में डोले, हाँ तुझ ही में डोले ।
 मन की तू घुंड़ी को खोल, खोल-खोल-खोल ।
 तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥टेक॥
 क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी,
 घट ही में है तेरे, घट-घट का वासी ।
 अन्तर का कोना टटोल, टोल-टोल-टोल ॥१॥